NEWS CLIPPING:04.03.2023

DAINIK SAVERA

जीपीसी में भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन का दूसरा दिन

सवेरा न्यूज़/रामचेत

मंड़ी गोबिंदगढ़, 3 मार्चः भारतीय भाषा समिति के सहयोग से 2, 3 और 4 मार्च को भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन पर तीन दिवसीय आवासीय और निःशुल्क कार्यशाला के दूसरे दिन गोबिंदगढ़ पब्लिक कॉलेज, अलौड, खन्ना ने आगे बढ़ते हुए दीप-प्रज्वलन और कालेज गान से शुरुआत की। प्रिंसीपल डा. नीना सेठ पजनी ने दिन के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) एसके तोमर, उप कुलपति, जे.सी. बोस यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, फरीदाबाद, हरियाणा और रिसोर्स पर्सन प्रो. (डॉ.) दीप्ति गुप्ता, अंग्रेजी और सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ का परिचय कराया। प्रबंधन सदस्य राज गोयल, सैक्टरी, गोबिंदगढ़ एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर ट्रस्ट भी कार्यशाला में पूरे मनोयोग से शामिल हुए। प्राचार्या डॉ. नीना सेठ पाजनी ने कार्यशाला के विषय के महत्व को विस्तार से बताया,

अकादमिक लेखन के दूसरे दिन का दृश्य।

क्योंकि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं की स्थिति को समझते हुए भारतीय भाषाओं में प्रकाशनों को समझना समय की आवश्यकता है। उन्होंने मुख्य अतिथि और रिसोर्स पर्सन का बायो-प्रोफाइल पेश किया। उन्होंने कहा कि कार्यशाला भारतीय भाषाओं में डिजाइनिंग और प्रकाशन पर मुख्य अतिथि प्रो. एस. के. तोमर द्वारा योग्य और समय-परीक्षणित विचारों के माध्यम से सहायता करेगी। डॉ. तोमर द्वारा दी गई विशेषज्ञ वार्ता ने प्रतिभागियों के लिए व्यावहारिक स्तर पर शोध प्रकाशन लिखने की प्रक्रिया को समझने के लिए एक आदर्श मंच तैयार किया। इस कार्यशाला में प्रश्न-उत्तर शामिल थे और प्रतिभागियों के लिए इंटरैक्टिव साबित हुई। डॉ. तोमर ने राष्ट्र के विकास में शोध-लेखन के योगदान पर विचार किया। उन्होंने बताया कि अनुसंधानकर्ताओं की रुचि उनके शोध के दौरान प्रासंगिक संसाधनों की ओर होगी। रिसोर्स पर्सन प्रो. डॉ. दीप्ति गुप्ता ने मानविकी और भाषाओं में परिडेटरी पत्रिकाओं की पहचान पर अपनी इंटरैक्टिव वार्ता प्रस्तुत की। प्रो. गुप्ता ने प्रतिभागियों को प्रामाणिक पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित करने के दौरान सतर्क रहने के लिए कहा। डॉ. गुप्ता ने शोध पत्रिकाओं की प्रामाणिकता की जांच के लिए विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों का उल्लेख किया। उन्होंने परिडेटरी पत्रिकाओं में प्रकाशनों की तकनीकी कमियों को विस्तार से बताया है और मानविकी और भाषाओं में प्रकाशन में प्रामाणिक समीक्षकों की प्रक्रिया का पालन करने पर ज़ोर दिया।

इस कार्यशाला में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बिहार सहित भारत के विभिन्न राज्यों से 71 प्रतिभागी ने भाग लिया। प्राचार्य डॉ. नीना सेठ पजनी ने मुख्य अतिथि, रिसोर्स पर्सन और सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

NEWS CLIPPING:04.03.2023

PUNJAB KESARI

जी.पी.सी. में चल रही 3 दिवसीय 'भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन' कार्यशाला का दूसरा दिन

राष्ट्र के विकास में शोध-लेखन के योगदान पर किया विचार

जी.पी.सी. में चल रही 3 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन राज गोयल के साथ डा. नीना सेठ पजनी व अन्य। *(सुरेश)*

मंडी गोबिंदगढ़, 3 मार्च (सुरेश): गोबिंदगढ़ पब्लिक कॉलेज (जी.पी.सी.) में भारतीय भाषा समिति के सहयोग से चल रही 3 दिवसीय 'भारतीय भाषाओं में अनुसंधान और अकादमिक लेखन' विषय की आवासीय व नि:शुल्क कार्यशाला के दूसरे दिन कालेज द्वारा इसको आगे बढ़ते हुए दूसरे दिन की शुरूआत दीप-प्रज्वलन और कालेज गान से शुरू की गई। इस कार्यशाला दौरान गोबिंदगढ़ एजुकेशनल एंड सोशल वैल्फेयर ट्रस्ट के सचिव राज गोयल पूरे मनोयोग से शामिल हुए।

इस मौके प्रिंसीपल डा. नीना सेठ पजनी ने दूसरे दिन के मुख्यातिथि प्रो. डा.एस.के. तोमर, उप कुलपति, जे.सी. बोस यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टैक्नोलॉजी, फरीदाबाद हरियाणा व रिसोर्सपर्सन प्रो. डा. दीप्ति गुप्ता, अंग्रेजी और सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ का परिचय करवाकर मुख्यातिथि व रिसोर्सपर्सन का बायो-प्रोफाइल पेश भी किया। उन्होंने कार्यशाला के विषय के महत्व को विस्तार से बताया कि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं की स्थिति को समझते हुए भारतीय भाषाओं में प्रकाशनों को समझना समय की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि कार्यशाला 'भारतीय भाषाओं में डिजाइनिंग और प्रकाशन' पर मुख्यातिथि प्रो. एस.के. तोमर द्वारा योग्य और समय-परीक्षणित विचारों के माध्यम से सहायता करेगी। डा. तोमर द्वारा दी गई विशेषज्ञ वार्ता ने प्रतिभागियों के लिए व्यावहारिक स्तर पर शोध प्रकाशन लिखने की प्रक्रिया को समझने के लिए एक आदर्श मंच तैयार किया। इस कार्यशाला में प्रश्न-उत्तर शामिल थे और प्रतिभागियों के लिए इंटरैक्टिव साबित हुई। इस मौके डा. तोमर ने राष्ट्र के विकास में शोध-लेखन के योगदान पर विचार किया।

उन्होंने बताया कि अनुसंधानकर्ताओं की रुचि उनके शोध के दौरान प्रासंगिक संसाधनों की ओर होगी, जबकि रिसोर्सपर्सन प्रो. डा. दीप्ति गुप्ता ने 'मानविकी और भाषाओं में परिडेटरी पत्रिकाओं की पहचान' पर अपनी इंटरैक्टिव वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रामाणिक पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित करने के दौरान सतर्क रहने के लिए कहा। उन्होंने शोध पत्रिकाओं की प्रामाणिकता की जांच के लिए विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों का उल्लेख किया।

उन्होंने परिडेटरी पत्रिकाओं में प्रकाशनों की तकनीकी कमियों को विस्तार से बताया है और मानविकी और भाषाओं में प्रकाशन में प्रामाणिक समीक्षकों की प्रक्रिया का पालन करने पर जोर दिया।

इस कार्यशाला में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बिहार सहित भारत के विभिन्न राज्यों से 71 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दूसरे दिन की कार्यशाला दौरान प्राचार्य डा. नीना सेठ पजनी ने मुख्यातिथि व रिसोर्सपर्सन और सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।